

प्रश्न - विमाना कांग्रेस सम्मेलन का आयोजन क्यों किया गया? इसकी क्या उपलब्धियाँ थीं? (1)

उत्तर - नेपोलियन के पतन के पश्चात् यूरोप के विजयी राष्ट्र ऑस्ट्रिया की राजधानी विमाना में 1815 ई. में एकत्र हुए। इसका उद्देश्य यूरोप में पुनः उसी व्यवस्था को स्थापित करना था, जिसे नेपोलियन के मुद्दों और विजयों ने अस्त-व्यस्त कर दिया था। ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटर्निक की पहल पर विमाना में कांग्रेस सम्मेलन बुलाया गया। मेटर्निक एक धीरे-प्रतिक्रियावादी था। इस सम्मेलन में ब्रिटेन, रूस, प्रशा और ऑस्ट्रिया जैसी यूरोपीय शक्तियाँ भाग लीं। इसे विमाना कांग्रेस सम्मेलन कहा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य यूरोप में शांति स्थापना करना तथा राजनीतिक व्यवस्था में लगे गये परिवर्तनों को समाप्त करना था। इसका मुख्य उद्देश्य पुरातन व्यवस्था की पुनर्स्थापना करना था।

इसके निम्नलिखित परिवर्तन हुए।

1. फ्रांस को नेपोलियन द्वारा विजित क्षेत्रों की वापस लौटाने को कहा गया।
2. प्रशा को उसकी पश्चिमी सीमा पर उसे महत्वपूर्ण क्षेत्र दिये गये।
3. इटली के अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभिन्न विभक्त कर दिया गया।
4. रूस को पोलैंड का एक भाग दिया गया।
5. जर्मन महासंघ पर ऑस्ट्रिया का प्रभाव स्थापित किया गया।
6. नेपोलियन द्वारा पराजित राजवंशों की पुनर्स्थापना की गई।
7. विमाना कांग्रेस ने यूरोपीय कन्सर्ट की भी स्थापना की।

2. प्रश्न - इटली और जर्मनी के एकीकरण में ऑस्ट्रिया की भूमिका क्या थी?

उत्तर - ऑस्ट्रिया इटली और जर्मनी के एकीकरण का विरोध करता था।

इटली - वेनेशिया और लोम्बार्डी पर ऑस्ट्रिया का अधिकार था। काबूर के नेतृत्व में फ्रांस और इटली की संयुक्त सेनाओं के ऑस्ट्रिया के मुक्त साथ मुद्दे के बाद ऑस्ट्रिया की तरह हुई और लोम्बार्डी से उसका प्रभाव समाप्त हुआ तथा लोम्बार्डी इटली राज्य में मिला लिया गया।

जर्मनी - जर्मनी ऑस्ट्रिया के अधिन ~~क~~ शक्तिहीन संघ राज्य था। उत्तरी जर्मन महासंघ की स्थापना के बाद जर्मनी से ऑस्ट्रिया का प्रभाव समाप्त हो गया।

इस प्रकार जर्मनी और इटली के एकीकरण में ऑस्ट्रिया मुख्य बाधक था।



प्रश्न - 1848 ई० के ~~क्रान्ति~~ फ्रांस की क्रांति के कारणों का वर्णन करें।

उत्तर - लुई फिलिप 1830 की क्रांति के बाद फ्रांस का सम्राट बना वह एक उदार वादी शासक था। उसने अपने विरोधियों को रक्षित करने के लिए स्वर्णिम मध्यम वर्गीय नीति का अवलम्बन करते हुए सन् 1840 ई० में धीरे धीरे सुधारवादी नीति को प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। वह वैधानिक साम्राज्य एवं आर्थिक सुधारों के विरुद्ध था। लुई फिलिप ने पूँजीपति वर्ग को अपने साथ रखना परसंद किया जिसे शासन के कार्यों में अधिकार नहीं थी और जो अल्पमत में था। उसके शासन काल में देश भर में भ्रष्टाचारी और बेरोजगारी व्याप्त होने लगी। लुई और उसके सरकार की आलोचना होने लगी। सुधारवादीयों ने 22 फरवरी 1848 ई० को पेरिस सुधारवादी दल के नेता धिपर्स के नेतृत्व में एक विशाल सुधार भोज का आयोजन किया। लुई ने इसपर रोक लगा दी। पेरिस में लोगों के समूह ने इकट्ठा होकर सुधारों की मांग करते हुए पेरिस की गलियों में जुलूस निकाल कर सरकार और राजशाही के विरुद्ध नारे लगाये। लुई फिलिप द्वारा गीमो को वखास्त कर दिया गया और सुधार कायून लागू करने की घोषणा की। परन्तु अगले दिन पुलिस ने जनता पर गोलीयाँ चला दी। अनेकों लोग मारे गये। क्रोधित जनता ने राजमहल को घेर लिया और लुई फिलिप को गद्दी छोड़ने पर मजबूर किया गया। तत्पश्चात् क्रांतिकारियों ने फ्रांस में द्वितीय गणराज्य की स्थापना की।